

महाभारत ५ अध्याय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 अथ द्रुपद उवाच ॥ २ ॥
 अहो भवति कुरुक्षेत्रे भद्रं ॥
 आरुह्यैव तव चक्रं महाबल ॥
 कुरुक्षेत्रे समवेता युयुतसः ॥
 स्याम कुरुक्षेत्रे समवेता युयुतसः ॥
 अहो भवति कुरुक्षेत्रे भद्रं ॥
 आरुह्यैव तव चक्रं महाबल ॥
 कुरुक्षेत्रे समवेता युयुतसः ॥
 स्याम कुरुक्षेत्रे समवेता युयुतसः ॥
 अहो भवति कुरुक्षेत्रे भद्रं ॥
 आरुह्यैव तव चक्रं महाबल ॥
 कुरुक्षेत्रे समवेता युयुतसः ॥
 स्याम कुरुक्षेत्रे समवेता युयुतसः ॥

संस्कृत-विज्ञान-सूत्रम्

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 अथ सूत्रम् ॥ २ ॥
 अथ सूत्रम् ॥ ३ ॥
 अथ सूत्रम् ॥ ४ ॥
 अथ सूत्रम् ॥ ५ ॥
 अथ सूत्रम् ॥ ६ ॥
 अथ सूत्रम् ॥ ७ ॥
 अथ सूत्रम् ॥ ८ ॥
 अथ सूत्रम् ॥ ९ ॥
 अथ सूत्रम् ॥ १० ॥

Handwritten text in a cursive script, likely Arabic or Persian, arranged in seven horizontal lines within a rectangular border. The script is dense and highly stylized, characteristic of historical manuscripts. The text is oriented vertically on the page, reading from top to bottom.

འཕྲུལ་སྐྱེ་བའི་གཏེ་ས་པར་དགོངས། །ཚོ་ས་སྐྱེ་བའི་ཚེ་རམ་མཁུ་སྐྱེ་བའི་ལམ་ལོ་རྟོག་། །ལྷ་བཟུང་བའི་ལམ་ལོ་རྟོག་ལམ་ལོ་རྟོག་ལམ་ལོ་རྟོག་།
ལམ་ལོ་རྟོག་ལམ་ལོ་རྟོག་ལམ་ལོ་རྟོག་ལམ་ལོ་རྟོག་། །འཕྲུལ་སྐྱེ་བའི་གཏེ་ས་པར་དགོངས། །ཚོ་ས་སྐྱེ་བའི་ཚེ་རམ་མཁུ་སྐྱེ་བའི་ལམ་ལོ་རྟོག་།
གཏེ་ས་པར་དགོངས། །དམི་སྐྱེ་བའི་གཏེ་ས་པར་དགོངས། །འཕྲུལ་སྐྱེ་བའི་གཏེ་ས་པར་དགོངས། །ཚོ་ས་སྐྱེ་བའི་ཚེ་རམ་མཁུ་སྐྱེ་བའི་ལམ་ལོ་རྟོག་།
མཁུ་སྐྱེ་བའི་གཏེ་ས་པར་དགོངས། །མི་རྟོག་ལམ་ལོ་རྟོག་ལམ་ལོ་རྟོག་ལམ་ལོ་རྟོག་། །ཚོ་ས་སྐྱེ་བའི་ཚེ་རམ་མཁུ་སྐྱེ་བའི་ལམ་ལོ་རྟོག་།
བཟུང་བའི་ལམ་ལོ་རྟོག་། །འཕྲུལ་སྐྱེ་བའི་གཏེ་ས་པར་དགོངས། །ཚོ་ས་སྐྱེ་བའི་ཚེ་རམ་མཁུ་སྐྱེ་བའི་ལམ་ལོ་རྟོག་། །ཚོ་ས་སྐྱེ་བའི་ཚེ་རམ་མཁུ་སྐྱེ་བའི་ལམ་ལོ་རྟོག་།
མི་རྟོག་ལམ་ལོ་རྟོག་ལམ་ལོ་རྟོག་ལམ་ལོ་རྟོག་། །དམི་སྐྱེ་བའི་གཏེ་ས་པར་དགོངས། །དམི་སྐྱེ་བའི་གཏེ་ས་པར་དགོངས། །དམི་སྐྱེ་བའི་གཏེ་ས་པར་དགོངས། །

